दृष्टि The Vision

drishti

Drishti Mentorship Program Mains-2023

निबंध (ESSAY)

निर्धारित समय: 1 घंटा 30 मिनट *Time allowed: 1 Hour 30 Minutes*

अधिकतम अंक: 125 *Maximum Marks: 125*

Name: Ravi Gangwar

Mobile Number:

Medium (English/Hindi): Hindi

Reg. Number:

Center & Date: Mukherjee Nagar, 17.07.23

UPSC Roll No. *(If allotted)*: 0806397

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A	I	69
सकल योग (Grand Total)		

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

* संस्कृति मन & आत्मा का विस्तार है *

बात उस समय की है, जब स्वामी विवेकानन्द विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने अमेरिका गये हुए थे। वहाँ विवेकानन्द ने अपना परम्परागत परिधान पहना हुआ था और इसी वजह से वहाँ के लोग उन्हें देखकर उपहास भी उड़ा रहे थे। किसी के पूछने पर उन्होंने कहा कि यहाँ के लोग किसी की मनुष्यता का अन्दाजा उसके पहने हुए कपड़ों से लगाते हैं जबकि मैं उस देश से आया हूँ जहाँ की संस्कृति में बाहरी वस्त्रों की अपेक्षा मानसिक खूबसूरती तथा सच्चरित्रता को अधिक महत्व दिया जाता है।

- उपर्युक्त विवरण औपनिवेशिक काल में भी भारतीय संस्कृति की उच्चता को प्रदर्शित कर रहा है और साथ ही यह भी बता रहा है कि भले ही अंग्रेजों

द्वारा हमारा आर्थिक , सामाजिक शोषण कर लिया जाये , किन्तु कुछ ऐसे मूल्य हैं जिनका विकास हमने सदियों की मेहनत और प्रयास से किया है , जिस वजह से न केवल भारतीय संस्कृति अपितु हर भारतीय का मन और इसके अन्दर बसी आत्मा भी इन रंगों में रंग चुकी है।

good intro

वस्तुतः आगे बढ़ने से पहले यह जान लेना उचित होगा कि संस्कृति वृहद स्तर पर किस अर्थ को सम्बोधित करती है? संस्कृति वास्तव में किसी समाज, देश, समूह , परिवार आदि में प्रचलित उन मूल्यों , प्रथाओं , परम्पराओं को माना जाता है , जिनका अनुकरण तथा पालन करने में न ही उन्हें झिझक होती है और न ही सोचना

पड़ता है। इसी प्रकार ऐसे मूल्य & परम्परा आदि का विकास एक सतत प्रक्रिया के माध्यम से होता है। जैसे कि भारत के सन्दर्भ में प्रचलित तथ्य 'अतिथि देवो भव' भारतीय संस्कृति में एक दिन में विकसित नहीं हुआ। यह प्रक्रिया तो उसी दिन प्रारम्भ हो गयी थी जब हमने वैदिक आर्यों को अपने यहाँ न केवल जगह दी, अपितु इनके मूल्यों, परम्पराओं आदि को भी अपनाया। इसी क्रम में फिर चाहे भारत में शक आये या तुर्क या फिर मुगल आये, जिनकी आत्मा साफ तथा मन सच्चा था तभी इन्हें भारतीय संस्कृति ने अपनाया।

जबकि लूट-खसोट, हिंसा के इरादे से आने वाले यहाँ नहीं रह पाये & फिर चाहे विश्व विजेता सिकन्दर का

ब्यास तट से लौटना हो या फिर महमूद गजनवी की भारतीय रेगिस्तान में अंतिम आक्रमण के बाद वापस जाते हुए मृत्यु हो। ~~इसी~~ इस के अलावा जो यहाँ रुका वह यहाँ का हो गया। Good

मुगल भारतीय सम्राट कहलाये तो वैदिक परम्परायें आज भी भारतीय संस्कृति की निरन्तरता में विद्यमान हैं।

अब बात करें कि संस्कृति के विभिन्न आयाम किस प्रकार कार्य करते हैं तो इस सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि सामाजिक मूल्यों सम्बन्धी परम्पराएँ, खाद्य संस्कृति, परिधान संस्कृति, राजनीतिक संस्कृति, खेल संस्कृति आदि कई आयाम प्रस्फुटित होते हैं। तभी भारतीय सन्दर्भ में कहा जाता है कि

कोस-कोस पर बदले पानी।
और पाँच कोस पर बाणी ॥

उ० उपर्युक्त कथन भारतीय संस्कृति की विविधता दिखाता है कि कैसे समाज में विविधिता, संस्कृति में विविधता का कारण बनती है। जैसे कि समाज के सन्दर्भ में अगर हम बात करें तो विभिन्न सामाजिक मूल्य जैसे- बड़ों का सम्मान करना, मातृभूमि की सेवा करना, आदि सकारात्मक मूल्य मानवीय मन (आत्मा के स्तर से शुरू होकर ही बाद में सामाजिक स्वीकृति के स्तर पर पहुँचे।

कुछ मूल्य ऐसे भी हैं जिनका सांस्कृतिक स्तर समय के साथ बदला भी है जैसे कि सती प्रथा एक समय में सम्मान की बात मानी जाती थी, किन्तु जब महिला सशक्तीकरण के क्रम में इसके खिलाफ आवाज उठी तो यह समाज में अस्वीकार्य हो गया। वस्तुतः

इसके खिलाफ मुखर आवाज उठाने में प्रमुख राजा राममोहन राय की आत्मा तब काँप गयी जब उनकी खुद की भाभी ~~भाबी~~ (भाई की पत्नी) को सती होना पड़ा। तब उन्होंने अपने मन में निश्चय किया कि इस अमानवीय प्रथा का विरोध करेंगे और धीरे-धीरे यह चेतना सबके मन & आत्मा तक पहुँची और 1829 में सती प्रथा निरोधक अधिनियम पास हुआ।

इसी क्रम में अगर बात की जाये तो किसी भी देश की बाध्य संस्कृति हो कि क्या खान-पान होगा वहाँ या परिधान संस्कृति हो। सब वहाँ के मनुष्यों के आत्मिक & मन के मूल्यों का दर्पण ही तो होता है। इसे इस तरह से समझिये यदि किसी समाज में रहने

वाले लोग मांसाहार को लेकर आत्मिक स्तर पर अपराधबोध से ग्रस्त होंगे तो वहाँ की खाद्य संस्कृति में यह कैसे रह पायेगा। इसी प्रकार अगर आज के समय में अगर परिधान के स्तर पर पश्चिमी पहनावा प्रमुख है तो इसके पीछे हमारे मन में आये बदलाव हैं कि परंपरागत धोती-कुर्ता आदि के प्रति नकारात्मक मनः स्थिति का निर्माण हो चुका है।

इस सन्दर्भ में एक उदाहरण देना चाहूँगा कि एक बार बर्नार्ड शॉ को किसी भोज में बुलाया गया था तो समय की व्यस्तता की वजह से वह घरेलू वस्त्रों में ही चले गये और वहाँ पहुँचने पर उनका सम्मान नहीं हुआ और उन्हें वस्त्र बदलकर आने को मजबूर किया गया। जिसके बाद में जार्ज बर्नार्ड शॉ परोसे गये भोजन को अपने कपड़ों पर

लेपकर वहाँ उपस्थित लोगों की मानसिकता का उपहास यह कहकर उड़ाते हैं कि निमंत्रण मेरे लिए नहीं तुम्हारे (कपड़े) लिए था। इसीलिए भोजन के असली हकदार तुम ही हो।

वस्तुतः उपर्युक्त उदाहरण से यह बताना की कोशिश की गयी है, कि आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति में मनुष्य की आत्मा तथा उसका मन इस हद तक विलासी, भौतिकवादी हो गयें हैं कि इन्हें केवल इस बात से फर्क पड़ता है कि तुम्हारा बाहरी रंग-रूप क्या है? जबकि सच यह है कि अन्त में हमारा वास्ता तो उस मनुष्य की प्रकृति, स्वभाव आदि से पड़ता है। शायद इसीलिए श्री राम ने शबरी के जूठे बेर खा लिये थे क्योंकि वह

शबरी के मन & आत्मा की पवित्रता को जानते थे। जबकि आधुनिक समय में खान-पान के सन्दर्भ में लोग भौतिकवादी मूल्यों जैसे कि "छूत" परम्परा पर विश्वास करते हैं।

वस्तुतः संस्कृति तत्कालीन समाज के लोगों का आत्मिक तथा सोच का दर्पण होती है। इसको ऐसे भी समझ सकते हैं कि समाज में जैसी चेतना होगी, संस्कृति का निर्माण भी वैसा ही होगा। जैसे कि उत्तराखण्ड की एक जनजाति स्वयं को पाण्डवों का वंशज मानती है तो वहाँ बहुपति प्रथा की संस्कृति विद्यमान है, जबकि अन्य जगहों पर इस मूल्य को एकदम स्वीकृति नहीं मिलेगी। इसी प्रकार राजस्थान में एक जनजाति अपने मेहमानों का स्वागत थूककर (spit) करती है जबकि अन्य जगह इसे अपमानजनक समझा

very good example

जायेगा। इस प्रकार यह मूल्य/प्रथा उनकी आत्मा ने स्वीकार की है तभी तो उनके मन ने उसे विस्तार दिया और आज वहाँ की संस्कृति भी वैसी है।

इसी प्रकार वैश्विक सन्दर्भ में अगर बात करें तो नाजीवादी हिंसा की स्वीकृति समाज में तभी मिली होगी जब वहाँ के लोगों ने इसे आत्मिक स्तर पर स्वीकार किया होगा। वस्तुतः प्रथम विश्वयुद्ध के अपमान का बदला लेने हेतु जब सम्पूर्ण जर्मनी में क्रोध व्याप्त था तभी नाजीवादी संस्कृति का उद्भव हुआ जिसमें सबके लिए नफरत थी।

अन्ततः संस्कृति और उसके आत्मा & मन सम्बन्धी रिश्ते के सन्दर्भ में एक बात कहना ~~चाहूँगा~~ उचित होगी कि मन & आत्मा तो समय कें सापेक्ष बहुत जल्दी बदल जाते

है, जबकि संस्कृति अपेक्षाकृत स्थायी तत्व होता है। इसलिए अगर संस्कृति को स्थायित्व के पायदान पर अनंत तक चढ़ते हुए देखना है तो समाज के मन & आत्मा का विस्तार सद्गुणों से होना चाहिए, दूसरों को साथ लेकर चलने वाला होना चाहिए, समय के साथ रूढ़िवादियों को छोड़कर आगे बढ़ने वाला होना चाहिए। अन्यथा संस्कृति कितनी भी महान क्यों न हो किसी न किसी समय पतन का शिकार हो जाती है फिर चाहे वह रोमन संस्कृति हो, या हिंसा पर आधारित नाजी क्रान्ति, जबकि इन्हीं के प्रतिउत्तर में भारतीय संस्कृति जो "वसुधैव कुटुम्बकम", 'सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे मूल्यों से परिचालित है, इसका अस्तित्व आज भी विद्यमान है। शायद किसी ने ठीक ही कहा है कि -

यूनान मो मिस्त्र ओ रूमा,
सब मिट गये जहाँ से।
अब तक मगर है बाकी, ~~[illegible]~~
नाम-ओ-निशाँ हमारा॥

कुछ बात है कि,
हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन,
दौर-ए-जहाँ हमारा॥

69/125

→ आपने बहुत शानदार तरीके से topic का विश्लेषण किया है।
→ आपके essay में flow एवं भाषाई दक्षता बहुत ही शानदार है।

Suggestion → Essay के topic के शब्दों का बीच-बीच में प्रयोग करते रहें इससे essay topic से connected feel होगा।

You are doing well, keep it up

Best wishes